आधुनिककाल / गद्यकाल

- आधुनिक काल (1900 – अब तक) डा॰ रामकुमार वर्मा, गणपतिचन्द्र गुप्त
- गद्यकाल (1900 – 1984 वि॰ सं॰) आ॰ रामचन्द्र शुक्ल ।
- वर्तमान काल, मिश्रबन्धुओं द्वारा कहा गया है।

आधुनिक काल

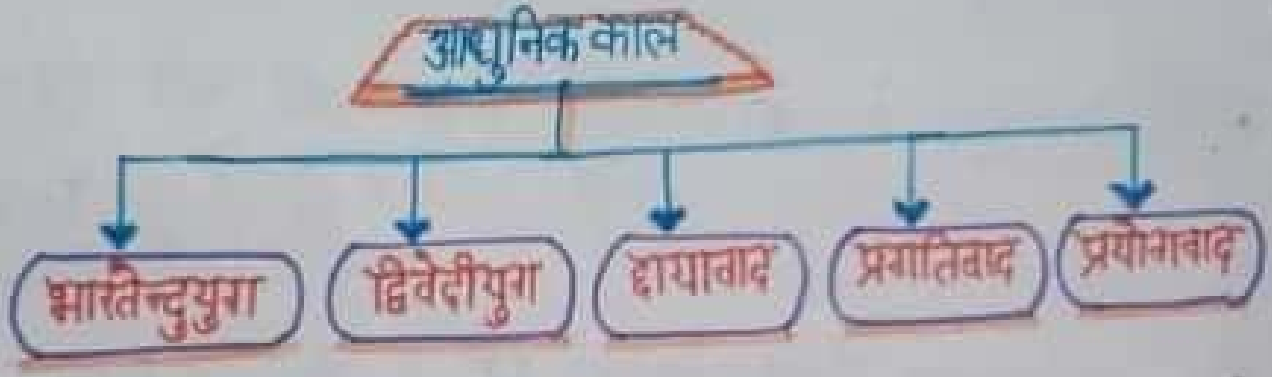

- भारतेन्दु युग
- द्विवेदी युग
- छायावाद
- प्रगतिवाद
- प्रयोगवाद

भारतेन्दु युग (1850 ई॰ – 1900 ई॰)

- **आ॰ रामचन्द्र शुक्ल** ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850 – 1885 ई॰) के रचनाकाल को दृष्टि में रखकर संवत् **1925** से **1950** की अवधि को **नयी धारा** अथवा **प्रथम उत्थान** की संज्ञा दी।
- भारतेन्दु युग को **नवजागरण या पुनर्जागरण** की भी संज्ञा दी गयी है।
- नवजागरण या पुनर्जागरण (**रेनेसाँ**) शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम फ्रांसीसी इतिहासकार '**मिशेलेट**' ने **19वीं सदी** के पूर्वार्द्ध में किया था।

→ हिन्दी में आधुनिकता और पुनर्जागरण के प्रवर्तक और पितामह **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** को माना जाता है।

→ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने **हरिश्चन्द्र मैगजीन** (1973, काशी से) अथवा **हरिश्चन्द्र चन्द्रिका** (1974, काशी से) संपादित की।
(हरिश्चन्द्र मैगजीन का परिवर्तित नाम हरिश्चन्द्र-चन्द्रिका है।)

→ **कविवचन सुधा** (18[illegible] ई. काशी) और **बाला बोधिनी** नामक पत्रिकाओं का संपादन भी भारतेन्दु जी (1874 ई. काशी) ने ही किया।

→ **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** (जीवन - परिचय)

→ 9 September, 1850 ई. काशी (जन्म)
→ 6 जनवरी, 1885 ई. काशी (मृत्यु)
→ पार्वती और गिरधरदास | गोपालचन्द्र (माता और पिता)
→ मन्नादेवी (पत्नी)
→ 'रसा' उपनाम से उर्दू में लिखते थे।
→ भारतेन्दु और मून आफ इण्डिया (Moon of India) उपाधि।
↓ ↓
- रमाशंकर व्यास ने भारतेन्दु की उपाधि दी।
- डा० रामविलास शर्मा ने हिन्दी साहित्य का पितामह कहा है।
- आ० रामचन्द्र शुक्ल आधुनिक हिन्दी का जनक कहा।

→ राधाकृष्ण दास (फुफेरे भाई थे)
→ पं० लोकनारायण (काव्य-गुरु थे)
→ राधा वल्लभ सम्प्रदाय | पुष्टिमार्ग को मानते थे।

- प्रेमजोगिनी (1874ई॰) विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की बात।
- कविवचनसुधा (पत्रिका) में भी विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की बात की गई है।
- कुछ आप बीती, कुछ जग बीती → **आत्मकथा**
- पूर्ण प्रकाश एवं चन्द्रप्रभा → **उपन्यास**
- भारत वर्षोन्नति कैसे हो ? → **निबन्ध**
  (1884, ददरी मेले पर लिखा गया)
- बंदरसभा → **व्यंग्य**
  (इसी में रसा नाम/उपनाम दिया गया)
- फूलों का गुच्छा → **खड़ी बोली** में लिखी गयी कविता है।

भारतेन्दु युग के अन्य महत्वपूर्ण कवि एवं प्रवृत्तियाँ :-

- **बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'** (जन्म, मृत्यु) (1855 - 1922) [1923 भी मिलता है, कहीं-कहीं]
- **प्रताप नारायण मिश्र** (1856 - 1894 ई॰)
- **जगमोहन ठाकुर सिंह** (1857, 1899)
- **अम्बिकादत्त व्यास** (1858, 1900)
- **राधाकृष्णदास** (1865 - 1907)
- अन्य कवियों में लाला श्री निवास दास, कार्तिक प्रसाद खत्री, राधाचरण गोस्वामी, अयोध्या प्रसाद खत्री, मेहता लज्जा राम शर्मा, गोपालराम गहमरी, विजयानंद त्रिपाठी,

महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर (विगत वर्षों में पूछे हुए)

* भारतेन्दु युग का एक अन्य नाम है → (पुनर्जागरणकाल) (T.G.T/2016)
* भारतेन्दु जी ने किस नाटक में स्वयं अभिनय किया है → (जानकीमंगल)
(P.G.T./2011) शीतला प्रसाद त्रिपाठी (1868)

* काशी में नेशनल थियेटर की स्थापना के प्रेरक रहे → (भारतेन्दु जी)
(काशी की नाट्य संस्था) (P.G.T./2015)

* तदीय समाज से किसका सम्बन्ध था → (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र) (TGT/2013)
'नवजागरण का अग्रदूत' हिन्दी के किस लेखक को कहा जाता है →
(भारतेन्दु हरिश्चन्द्र) (P.G.T./2004)

* भारतेन्दु ने अपना बलिया वाला ऐतिहासिक व्याख्यान दिया था →

> दिसम्बर, 1884, हरिश्चन्द्र चन्द्रिका में। बलिया व्याख्यान या बलिया का भाषण '**भारत वर्षोन्नति कैसे हो सकती है।**' (T.G.T/2004)

* भारतेन्दु युग के कवियों ने अधिकांशतः किस भाषा में कविता की है →
(ब्रजभाषा) (N.V.S/T.G.T./2019)

* गोल्ड स्मिथ की कृति ट्रैवलर का अनुवाद किसने किया → (P.G.T/2013) (श्रीधर पाठक)

* भारतेन्दु जी का खड़ी बोली में रचित कविताओं का संग्रह किस नाम से प्रसिद्ध है → (फूलों का गुच्छा) (P.G.T. 2000)

* शेक्सपीयर के सभी नाटकों का हिन्दी अनुवाद किसने किया → (लाला सीताराम) (P.G.T. 2005) (हिन्दी केन्द्रीय विद्यालय)

* बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' उर्दू में किस नाम से कविता लिखते थे → (अब्र) (N.V.S परीक्षा 2010)

* मेघदूत काव्य का खड़ी बोली में अनुवाद किसने किया → (राजा लक्ष्मणसिंह)

* लाला श्री निवासदास जी की संयोगिता स्वयंवर की सच्ची समालोचना किसने की थी → (बालकृष्ण भट्ट) (P.G.T. 2013)

Note :- बालकृष्ण भट्ट के अनुसार ' रणधीर प्रेममोहिनी ' (लाला श्री निवासदास जी द्वारा कृत नाटक) ट्रेजेडी के किस्म का पहला नाटक है जो हिन्दी भाषा में लिखा गया है।

देवकीनंदन खत्री, किशोरीलाल गोस्वामी इत्यादि।

चन्द्रकांता → उपन्यास तिलस्मी ऐयारी उपन्यासों के जनक माने जाते हैं।	इन्होंने उपन्यास को प्रेम का तिजारा कहा है।

भारतेन्दु युग की प्रवृत्तियाँ :- (लक्षण | विशेषता)

Imp. Question
P.G.T-2010

→ समस्या पूर्ति, भारतेन्दु युग की काव्य शैली थी।
→ समस्या पूर्ति, करने वाले कवियों में रामकृष्णवर्मा और बद्रीनारायण 'प्रेमघन' जी जो विविध विषयों पर तत्काल समस्या पूर्ति करते थे।

- समस्या पूर्ति।
- देशभक्ति और राष्ट्रीय भावना।
- जनवादी विचारधारा।
- प्राचीन परिपाटी की कविता।
- कलात्मकता का अभाव।
- काव्य में ब्रजभाषा का प्रयोग।
- हास्यव्यंग्य और प्राचीन छन्द।
- प्रकृति - चित्रण।
- गद्य-शैली का परिमार्जन एवं परिष्करण।

K. SHIWAM

हिंदी साहित्य को भारतेंदु युग की देन

आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक माने जानेवाले भारतेंदु का युग आधुनिक हिंदी साहित्य का प्रवेश-द्वार है। यह युग प्राचीन मर्यादाओं की रक्षा करते हुए भी नवीन राजनैतिक-सांस्कृतिक चेतना को लेकर आगे बढ़ा। भाषा के स्तर पर देखा जाए तो फोर्ट विलियम कॉलेज से शुरू होकर सिर्फ खड़ी बोली गद्य जो 60 वर्षों में स्वरूपता प्राप्त न हो सकी उसे भारतेंदु ने स्वरूप ही नहीं दिया बल्कि गद्य की विविध विधाओं की भी शुरुआत की। देश और समाज के विकास के लिए भाषा के विकास को जरूरी मानते हुए उन्होंने स्पष्टतः लिखा —

" निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल।"

उन्होंने खड़ी बोली हिंदी में काव्य रचना कर उस मिथ को तोड़ा जिसमें यह अवधारणा थी कि ब्रजभाषा के अलावा खड़ी बोली में पद्य रचना संभव नहीं है।

जहाँ तक नाटक साहित्य की बात है भारतेंदु से पूर्व के मौलिक नाटकों में केवल दो नाटक उल्लेखनीय हैं — महाराजा विश्वनाथ सिंह का 'आनंद रघुनंदन' और गोपालचंद्र उर्फ गिरिधर दास का 'नहुष'। यद्यपि हिंदी को संस्कृत और प्राकृत नाटकों की अमूल्य पैतृक संपदा विरासत के रूप में मिली थी तथापि हिंदी के साहित्यकार 19वीं सदी से पूर्व उसका उपयोग नहीं कर पाये। इसका मूल कारण उस काल की राजनैतिक परिस्थितियाँ थीं। अंग्रेजी राज्य के उदय के साथ नाटक के प्रति अनुकूल समय का निर्माण हुआ। किंतु भारतेंदु के नाटक क्षेत्र में प्रवेश करते ही नाटकों की बाढ़ सी आ गयी। उन्होंने यह अनुभव किया कि नवीन जनचेतना को नाटक द्वारा ही सबसे तरीके से अभिव्यक्त किया जा सकता है। उन्होंने मौलिक नाटकों में 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' 'श्री चंद्रावली' 'विषस्य विषमौषधम्' 'भारत दुर्दशा' 'नीलदेवी' 'अंधेर नगरी', सत्य हरिश्चंद्र' 'प्रेमजोगिनी' सहित कई नाटकों का संस्कृत से अनुवाद भी किया।

भारतेंदु के प्रभाव से उनके समकालीन कई साहित्यकारों ने नाटक लिखे। बालकृष्ण भट्ट ने 'नल-दमयंती स्वयंवर' 'नई रोशनी का विष' 'जैसा काम वैसा परिणाम' प्रताप नारायण मिश्र ने 'गौ संकट' 'कलि प्रभाव' 'जुआरी खुआरी' 'हम्मीर हठ', बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने 'भारत सौभाग्य' राधाकृष्ण दास ने 'दुखिनी बाला' 'महारानी पद्मावती' 'महाराणा प्रताप' जैसे नाटकों की रचना की। इनके अलावा गदाधर भट्ट, अंबिकादत्त व्यास, श्रीनिवास दास जैसे साहित्यकारों ने हिंदी नाट्य साहित्य को संपन्न बनाया।

कथा साहित्य की दिशा में भी कुछ ऐसी ही देन भारतेंदु युग की रही। हालांकि भारतेंदु से पहले इंशा अल्ला खाँ ने 'रानी केतकी की कहानी' सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' लल्लूलाल ने 'प्रेमसागर' जैसी कृतियों की रचना की किंतु इन रचनाओं में कथासाहित्य का आभास मात्र मिलता है। भारतेंदु युग ने हिंदी कथासाहित्य को अपनी पहचान दी। स्वयं भारतेंदु ने 'मदालसोपाख्यान' 'कुछ आपबीती कुछ जगबीती' बालकृष्ण भट्ट ने 'नूतन ब्रह्मचारी' 'रहस्यकथा' 'सौ अजान एक सुजान' अंबिकादत्त व्यास ने 'आश्चर्य वृत्तांत', राधाकृष्ण दास ने 'निस्सहाय हिंदू' जैसे उपन्यासों की रचना कर हिंदी कथासाहित्य को नये आयाम दिए।

भारतेंदु से पहले हिंदी में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू तो हुआ किंतु आर्थिक समस्या और विपरीत वातावरण के वजह से परंपरा का रूप नहीं ले सकी। भारतेंदु ने 1867 ई० में 'कवि वचन सुधा' 1873 में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' 1874 में 'बालाबोधिनी' जैसी पत्रिकाओं का संपादन-प्रकाशन किया। इन पत्रों में अंग्रेजी कुशासन के खिलाफ सैकड़ों लेख, कविताएँ तथा आलोचनाएं प्रकाशित हुई जिस कारण काशी के अंग्रेज मैजिस्ट्रेट ने इन्हें खरीदने पर प्रतिबंध लगा दिया। फिर भी भारतेंदु की निर्भीकता ने उस काल के अनेक पत्रों को प्रोत्साहित किया था। इनसे प्रेरणा ग्रहण कर उनके समकालीन तथा परवर्ती साहित्यकारों में बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, 'प्रेमघन', अंबिकादत्त व्यास, रामदीन सिंह, शिवनारायण, नवीन चंद्र राय, केशवराम भट्ट, तोताराम वर्मा, सदानंद मिश्र, दुर्गा प्र० मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, राधाकृष्ण दास, देवी प्रसाद, देवकीनंदन खत्री के नाम उल्लेखनीय हैं।

स्पष्ट है कि इन पत्र-पत्रिकाओं से ही निबंध और आलोचना विधा का श्रीगणेश हुआ। बालकृष्ण भट्ट के 'हिंदी प्रदीप' तथा प्रेमघन की 'आनंद कादंबिनी' का इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान रहा। इस युग के लेखकों ने पाश्चात्य आलोचना पद्धति का अध्ययन कर अपने युग के लेखकों के सम्मुख नये आदर्श उपस्थित किये। इतिहास एवं पुरातत्व से जुड़े भारतेंदु के लेख एक अमूल्य धरोहर हैं।

गद्य की विविध विधाओं के साथ-साथ कविता के क्षेत्र में भी भारतेंदु का योगदान अविस्मरणीय है। रीतिकाल में कविता-कामिनी दरबार की चेरी बन रही थी और राधा-कृष्ण की आड़ लेकर मांसल शृंगार की उद्भावनाएं की जा रही थीं। किंतु भारतेंदु ने राधाकृष्ण के प्रति विनय-भक्ति के सरस पदों की रचना की। शृंगारिक रचनाएँ उन्होंने की भी तो उन कविताओं में सौंदर्य और प्रेम के सात्विक स्वरूप का ही चित्रण किया जिसमें सहजता, सरलता और मधुरता का समावेश हुआ है।

भारतेंदु के पहले प्रकृति चित्रण का हिंदी साहित्य में कोई विशेष स्थान नहीं था। रीतिकाल में तो प्रकृति मात्र उद्दीपन का कार्य करती रही। भारतेंदु ने ~~प्रकृति~~ प्रकृति के आलंबन रूप का वर्णन कर अपनी अपूर्व काव्य प्रतिभा का परिचय दिया।

वस्तुतः भारतेंदु हरिश्चंद्र विविध प्रतिभा संपन्न एक युग प्रवर्तक साहित्यकार थे। वे एक व्यक्ति नहीं बल्कि संपूर्ण युग हैं जिनके नाम पर आज भी आधुनिक हिंदी साहित्य का काल विभाजन किया जाता है। इनका काल हिंदी साहित्य का 'नवजागरण काल' कहा जाता है। भारतेंदु के संबंध में 'स्वर्ण मंजूषा' के संपादकद्वय ने लिखा है — " नील गगन में ध्रुव तारा का, पावस में प्रथम फुहार का तथा माला में प्रथम मणि का जो स्थान और महत्वपूर्ण स्थान है वही स्थान हिंदी साहित्य में नवयुग प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र का है।"